ओ३म्

गुरु विरजानन्द ...
सन्दर्भ ...
3885

आर्यसमाज ने क्या ...

लेखक

पं० छुट्टनलाल ...

मैनेजर स्वामी-औषधालय

परीक्षितगढ़ (...

प्रकाशक और प्रिंटर ...

पं० तुलसीराम स्वामी-मेरठ

Printer-P. Tulsi Ram

Swami Machine Press

MEERUT

1910

ओ३म्

आर्यसमाज ने क्या किया?

आर्य्यसमाज ने जो जो भलाई आर्य धर्म के लिये की हैं, उन की गणना अङ्गुलियों के पोरवों से बहुत अधिक हैं। आर्य समाज की भलाइयों के गिनने के लिये हाथों की अङ्गुली थोड़ी हैं, भलाई बहुत अधिक हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती जो आर्यसमाज के उद्धारक थे, कोई लोग इन को आर्यसमाज के जन्मदाता भी कहते हैं। परन्तु वैदिक-धर्म सोया पड़ा था, वेदों के नाममात्र लोग सुना करते थे, जानते न थे कि वेद कितने बड़े हैं, वेदों में क्या लिखा है। वाममार्गी लोग वेदों में मद्य मांस खाना बताते थे और वैष्णव कहते थे कि वेद में मद्यमांस का निषेध है, गोपी चन्दन लगाने का विधान है। चक्राङ्कित कहते थे कि वेद में तप्तमुद्रा द्वारा शरीर पर छाप (दाग़) लगाना लिखा

है। शैवों का दावा था कि वेद में भस्म चढ़ाना बताया है। कूंडा पन्थी कहते थे कि वेद में सब को एक पात्र में एकत्र बैठ कर खाने पीने और मांस खाने की आज्ञा है। रामानुजी वेद में जीव ब्रह्म प्रकृति को पृथक् २ बताते थे। शंकराचार्य के शिष्य केवल एक ब्रह्म का ही वर्णन कहते थे। कहां तक कहूं, सब अपनी अपनी ओर को बताते थे। वेद का तत्त्व या वेद के मर्म का हाल किसी को भी ज्ञात न था। ईसाई वेदों में जङ्गली पुरुषों के गीत बता कर वेदों से बिछोहा कराते थे॥

१-ऐसे समय में वेदप्रचार किया

आर्यसमाज ने वेदों को घर घर शह शहर में फैला दिया है। हिन्दी भाषा में वेदों का भाष्य प्रथम आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्व. दयानन्द ने ही किया है। इस से पहिले कोई भाषाभाष्य नहीं था। वेदों के पुस्तक छपाये, सस्ते दामों पर विक्रय कराये॥

जिस आर्यसमाज ने हम को वेदों का प्रसाद दिया, लोप हुवे वेदों के दर्शन कराये, वेदों में सब सत्य विद्याओं का मूल दर्शाया, डूबते हुवे वेदप्राण आर्यों की नौका को भंवर से निकाल कर किनारे की ओर करने के लिये बल्ली पाथे चला रहा है, उस आर्यसमाज की रक्षा और सहायता करना हमारा सब का कर्त्तव्य है ॥

२—सन्ध्या का प्रचार

कई लाख सन्ध्या पुस्तक छाप २ कर सेंत मेंत (मुफ़्त) बांटे और बेचे गये हैं। हज़ारों आर्यसमाजी दोनों समय सन्धया करते हैं, वेदपाठ करते हैं, ईश्वर की प्रार्थना, उपासना करते हैं ॥

एक ईश्वर की भक्ति

भारतवर्ष में एक ईश्वर की पूजा के बदले अनेक ईश्वर बना लिये थे। किसी का (ईश्वर) भगवान् माखन मिश्री से प्रसन्न होता था, किसी का भगवान् भङ्ग

धतूरा पीता था, किसी का भगवान् ऋतु ऋतु की पोशाक बदलता था, किसी का नंगे शरीर पर सांपों की लंगोटी ही लगाने वाला था, किसी के भगवान् गरुड़ पर, किसी के बैल पर चढ़ते थे, किसी के भगवान् पूज्य-देव न थे, उन की भगवती जो ही भुक्ति मुक्तिदात्री थी। किसी की देवी सिंह पर सवार खून पीने से प्रसन्न बकरे भैंसों को भेट लेती थी, किसी का भगवान् भैरव कुत्ते पर चढ़ता था, किसी के धर्मग्रन्थ स्मृति, किसी का धर्मपुस्तक भागवत, किसी का धर्म शिवपुराण, किसी का धर्म कालिकापुराण, किसी का तन्त्र, किसी का गुरुग्रन्थ, किसी का कबीरसाखी, किसी का दादूग्रन्थ, किसी का पानपदासी वाणी, किसी का चरणदासी वाणी, ऐसे ही भारत में ३३ कोटि देवता, लाखों ग्रन्थ और धर्मपुस्तक थे, हज़ारों मन्दिर जुदे जुदे मत के, सैंकड़ों मन्त्र जपने के थे। तिस पर भी पीरपूजा (मुर्दे मुसलमानों की क़ब्रपरस्ती) मीरां, गूगा, नौगज़े आदि

पीरों की पूजा, चादर, शीरनी चढ़ाने से भारत के ज़िन्दे हिन्दू मुर्दे पूजते २ खुद मुर्दे बन गये थे, आर्यसमाज ने जगा दिये। आर्यसमाज ने एक ईश्वर, ओ३म् की उपासना, एक वेद को धर्मग्रन्थ और एक गायत्री को गुरुमन्त्र बता दिया। सच्चा मार्ग वेद में मिलेगा, यही सिखा दिया। इस लिये भारत क्या भूमण्डलमात्र, नहीं २ संसार का उपकार समाज ने किया है॥

३-संस्कार प्रचार

आर्यसमाज ने १६ संस्कारों का (जो वेदों के मानने और जानने वाले ऋषि मुनियों ने सत्ययुगादि से माने थे) फिर से प्रचार किया। संस्कारों को दलील (युक्ति) से, प्रमाणों से सिद्ध किया। संस्कारों के ठीक समय पर न होने से जो हानि हो रही थीं, उन हानियों को समझा कर ठीक समय पर संस्कार करने कराने का उद्योग किया। सहस्रों यज्ञोपवीत

त्यागे हुवे द्विजों को यज्ञोपवीत कराये। शूद्रों के समान पड़े हुवे द्विजसन्तानों को फिर से द्विज होने का अभिमान कराया है। सहस्रों द्विजसन्तान भूले भटके फिरते थे। २४ अक्षर की गायत्री नसीब नहीं होती थी। २४ अक्षरों के साथ २४ गायत्री मन्त्र तयार थे, कई ब्रह्मगायत्री, क्षत्रियगायत्री, वैश्यगायत्री, शूद्रगायत्री, वैष्णवगायत्री, दुर्गागायत्री, शिवगायत्री; ऐसी अनेक गायत्री वेदविरुद्ध थीं, सब को मिटाकर एक ब्रह्म (वेद) गायत्री का उपदेश ही आर्य समाज ने द्विज कल्याण का साधन बुद्धि वर्द्धक ईश्वरीय विज्ञानकारक सिद्ध किया॥

४-अग्निहोत्र और हवन

द्विजसन्तान हवन जैसे संसार के उपकारी सूर्यादि लोकों तक प्रभावकारी रोग शोकविनाशक धनधान्य के देने वाले अपने नित्यकर्म को भूल गई थी, किन्तु उसे एक फजलखर्ची समझ बैठी थी। आर्यसमाज के

प्रताप से सैंकड़ों मनुष्य नित्य हवन करते हैं, हज़ारों मनुष्य त्यौहारों पर हवन करते हैं, और लक्षों मनुष्य संस्कारों के समय सुगन्धित पुष्टिकारक द्रव्यों से हवन करते हैं ॥

आर्यसमाज ने सिद्ध कर दिया है कि हवन अग्निहोत्र परलोक सुख के सिवाय मनुष्यों के जीवन के लिये भी ज़रूरी है। हवन से हवा की शुद्धि (सफ़ाई) होती है। हवा ही मनुष्य के जीवन का मुख्य आधार है। मनुष्य अनेक मलों द्वारा संसार में दुर्गन्धि फैलाता है, उस का बदला नित्य होम से ही हो सकता है। हमारे ऋषि मुनियों की वेदी में प्रातःकाल का हवन सायङ्काल तक और सायङ्काल का हवन प्रातःकाल तक सुगन्ध उठाता था, आर्यसमाज ने फिर प्रचार किया ॥

५-विवाह संस्कार

इस देश में बालकों के विवाह का प्रचार बहुत बढ़गया था, उन बेचारे बालकों को

यह भी ख़बर नहीं होती थी कि विवाह का क्या अर्थ है, किस लिये विवाह होता है, तथा हम को क्या २ करना होगा। वे बालक बाजे, गाजे, नाच, तमाशे को देखकर मग्न होते थे। एक रामलीला या मुसलमानों के मुहर्रम की पटाबाज़ी, ताशे बजाने जैसा त्यौहार अपने घर जान कर हाथ में कङ्कना शिर पर मौड़ सेहरा लटका लेते थे, उन बेचारों को ख़बर न थी कि:-

"तुलसी गाय बजाय कर, देत काठ में पांव"

यह गाना बजाना उड़ते तोतों को पिञ्जरे में बन्द करने जैसा तमाशा बालक क्या जानते थे। ख़ुशी २ ब्याह (विवाह) करा लेते थे। गृहस्थ की सारी प्रतिज्ञा पण्डित पाधा ही कर लेते थे। आर्यसमाज ने बता दिया कि बड़ी उमर में विवाह करो, जब वर बरनी जान जावें कि विवाह में सुख क्या है, क्यों विवाह कराते हैं॥

विवाह में फूलबाड़ी लुटाना, रण्डी, भांड नचाना भी आर्यसमाज ने बन्द करा

दिया है। वेश्या नाच की बुराई थोड़ी सी दिखाता हूं। जैसेः—

६—वेश्या नाच

१—वेश्या के नाच से पुरुषों के चित्त बिगड़ते हैं, बुरे भाव पैदा होते हैं। बाप दादा गुरुजन और छोटे २ बालकों, बेटे पोतों के बैठे हुवे वेश्या से हंसी दिल्लगी होती हैं, जिस से छोटों को बड़ों की शर्म और बड़ों को छोटों की लज्जा दूर होजाती है। मानमर्यादा घटकर बुरे चलनमें पड़जातेहैं॥

२—स्त्रियों के चित्तों पर भी बहुत बुरा असर पड़ता है, घर में बैठी २ बेचारी रोटी बनाती हैं, बच्चों की सेवा करती हैं, चौका बर्तन साफ़ करती हैं, तब भी मैले मोटे वस्त्र पहनती हैं और मर्दों की घुड़की सहती हैं। वेश्या पान इतर गहने कपड़ों से ठीक ठाक बनी ठनी है। पुरुष उस के नख़रे सहकर चापलोसी, मीठी २ बातें कर रहे हैं, यह देख एक लज्जा छोड़ने से सब

सुख मिलते जान बीसियों गृहस्थ स्त्री वेश्या बन बैठती हैं ॥

३–बेचारी ८। ९ वर्ष की अवस्था की बालिका विधवा भी बालविवाह के कारण बहुत सी घर में बैठी हैं, वह सती भी बहुत हैं जो मन मारे बैठी हैं। वेश्या को देख आग पर घी के सी धारा उन के हृदय पर पड़ती है और मौक़ा लगने पर उन्हें घर छोड़ भागने की इच्छा होजाती है। ऐसे कठिन समय में जब घर के चारों ओर व्यभिचारी वास करें, वेश्यानाच मुहल्लों में हों, तब उन सती जी का टिकना घर में मुश्किल है। आये साल सैंकड़ों गृहस्थ स्त्री वेश्या बन रही हैं, ऐसे समय में आर्यसमाज ने वेश्या के नाच को रोक कर बड़ा भारी उपकार किया है ॥

धन को धर्मकामों में लगाना

वेश्यानृत्य आदि बुरे कामों में धन को नहीं लगा कर उपदेश, अनाथालय, गुरुकुल,

कालिज, कन्यापाठशाला और विधवाश्रम आदि अनेक संस्था खोलकर उन में रुपया लगाया जाता है ॥

७—उपदेश

आर्यावर्त्तदेश में, अनेक शहरों में, उत्सवों में, मेलों में, बाज़ारों में, वेदों का धर्मोपदेश कराते हैं, देश देशान्तरों में भी धर्मोपदेश किया, कराया है, जिस का फल भी हुवा है। बहुत से अङ्गरेज़ों ने मांस खाना छोड़ दिया, बहुत से अङ्गरेज़ मुर्दा जलाने लगे। बहुत से मुसल्मान मांस खाना छोड़ कर चोटी रखा कर वेद को मानने लगे, कुरान को छोड़ बैठे हैं ॥

८—अनाथ रक्षा

इस देश में जब किसी बालक के माता पिता मर जाते थे या किसी क़सूर पर बालक की माता को जेलख़ाना हो जाता था, तब उस के बालक का कोई पालने वाला न मिलता था तो हमारे हाकिम लाचार ऐसे बालकों को ईसाइयों के पास भेज देते

थे, ईसाई उन को पाल पोष कर बड़ा करते थे, उन्हें ईसाई बनाते थे। अब आर्यसमाज ऐसे बालकोंको अपने हाथ में लेलेता है। हाकिम लोग हिन्दू बालकोंको आर्यसमाज के अनाथालयों को भेज देते हैं, या ख़बर होते ही आर्यसमाज ऐसे बालकों को लेकर अनाथालयों को भेज देताहै। ऐसे अनाथालय आर्यसमाजके हाथमें बहुतसे हैं—जैसे बरेली, आगरा, अजमेर, लाहौर, फ़ीरोज़पुर, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश आदि २ अनाथालय आर्यसमाजों के हैं। आर्यसमाज को देख कर वैश्य अनाथालय मेरठ, वृन्दावन, मथुरा में भी अनाथालय बन गये हैं। अनाथालयों में माता पिता से बिछड़े छोटे २ एक एक दिन के एक एक महीने के भी बालक रुई के फाये में लिपटे आते हैं, उन के लिये दूध पिलाने को धाय रक्खी जाती हैं, गौ भी दूध पीने के लिये रहती हैं। पाल पोष कर बड़े होने पर या जो बालक ५ वर्ष से ऊपर आते हैं उन के पढाने को पण्डित रहते

हैं। पढ़ा कर उन्हें निवाड़ बुनना, बढ़ई का काम या और हुनर कारीगरी सिखा कर खाने कमाने लायक़ बना कर १८ वर्ष का लड़का अलग करदिया जाता है और—

कन्या को

कपड़े सीना पुरोना, रोटी बनाना, जुराब, मोज़े, गुलूबन्द बुनना; घर के काम काज योग्य बनाकर विवाह भी किसी खाते पीते पुरुष से करदिया जाता है॥

९ कन्या पाठशाला

आर्यसमाज ने कन्यापाठशाला उस समय से बनाई हैं, जब इस देश के लोग कन्या पढ़ाने में कहते थे कि कन्या पढ़कर क्या दफ़्तर में लिखेंगी या दारोग़ा बनेंगी या तहसीलदारी करेंगी? पढ़कर ख़राब हो जायेंगी। अब सब लोग कन्या पढ़ाना चाहते हैं, विना पढ़ी कन्या की सगाई भी भले घरों वाले बड़े आदमी पढ़े लिखे लोग नहीं लेते, कहते हैं विना पढ़े धर्म कर्म का ज्ञान नहीं

होता, विना पढ़ा आदमी पशु समान होता है। सीता, द्रौपदी, लीलावती, गार्गी, मैत्रेयी, सुलभादि पहिले भी पढ़ी लिखी थीं। विना पढ़ी स्त्रियोंकी सन्तान भी कठिनता से पढ़ती हैं। पढ़ी हुई स्त्रियों को चुड़ैल, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत नहीं सताते। यह सब आर्यसमाज की बदौलत स्त्रीशिक्षा इस देश में फैली है। कन्या पढ़ाने की छोटी २ पाठशाला तो आर्यसमाजों की सैकड़ों हैं परन्तु बड़ी २ भी पाठशाला पञ्जाब के जालन्धर में यू० पी० के देहरादून में हैं॥

१० अङ्गरेज़ी पढ़ाने के स्थान

आर्यसमाजों में अङ्गरेज़ी पढ़ाने के साथ २ धर्म कर्म की बात सिखाने के लिये बहुत स्कूल हैं, जहां मिडिल तक और ऐंट्रैन्स तक पढ़ाई होती है, हज़ारों लड़के सन्ध्या सीखते और वेदमन्त्र भी पढ़ते हैं। सब से बड़ा लाहौर का दयानन्द कालिज है, जिस के पास ९ लाख रुपये का सामान

है तो भी विना तनख़्वाह लिये (सब से बड़े पढ़ाने वाले) प्रिंसिपल ला० हंसराज हैं, जो रात दिन कालिज का काम स्वार्थ छोड़ करते हैं। इस वर्ष ५० विद्यार्थी बी० ए० पास हुवे। कालिज में १८०० सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिन में से ६०० से अधिक विद्यार्थी-आश्रम (बौर्डिङ्ग हौस में) रहते हैं॥

११-गुरुकुल

ऋषियों की पुरानी रीति है कि ८ वर्ष के बालक को यज्ञोपवीत करके गुरुकुल में भेज देते थे, वहां २५ वर्ष की आयु तक कम से कम रहते थे और वेद तक विद्या पढ़ते थे। प्रयाग प्रान्त के फ़र्रुख़ाबाद नगर में आर्यसमाजों ने पुरानी रीति पर गङ्गा-तट पर गुरुकुल खोला है। वहां ८।१० वर्ष के बालक भेजे जाते हैं, पढ़ाई में अच्छी रीति पर ऋषि मुनियों के बनाये सच्चे ग्रन्थ और वेद पढ़ाये जाते हैं। गुरु-कुल के ब्रह्मचारी वेदपाठ सन्ध्या अग्निहोत्र

नित्य एकत्र बैठकर करते हैं। बनाबनाया भोजन और दूध उन्हें ठीक समय पर मिलता है। स्त्रियों का दर्शन तक नहीं होने पाता ॥

१२–आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त के काम–

१–इस वर्ष सभा का दफ़्तर मेरठ शहर में है, इस सभा में लगभग २३० समाज हैं, जो वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं ॥

२–सभा की ओर से फ़र्रुख़ाबाद में गुरु-कुल है जिसमें ९० ब्रह्मचारी वेद पढ़ने के लिये दाख़िल हैं, वेद पढ़ाने में सहायक हूजिये ॥

३–आर्यमित्र साप्ताहिक पत्र आगरे से निकलता है जिस में आर्यधर्म की रक्षार्थ लेख आठवें दिन नये २ छपते हैं। मोल २) साल भर का देकर ग्राहक हूजिये ॥

४–वेद प्रचार फ़ंड–आर्यसमाजों में और गांव २ में वेद धर्म को फैलाने के लिये उपदेशक हैं। जो भाई इस में रुपया देंगे, उन्हें वेद धर्म के फैलाने का पुण्य होगा ॥

५–पुस्तक प्रचार–छोटे छोटे पुस्तक छपा कर मुफ़्त मेलों पर बांटना भी सभा का काम है, जैसा यह पुस्तक आप पढ़ रहे हैं ॥

१३–आर्यसमाजों के रत्न–

संन्यासी विद्वान्–

१–श्रीमान् स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी और श्री विश्वेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज आदि जिन्हों ने महाराज बड़ौदा जैसे राजों में सन्मान पाया है, अनेक ग्रन्थ वेदशब्दकोश आदि बनाये हैं ॥

२–गृहस्थ विद्वान्–श्री पं० तुलसीराम स्वामी जी सामवेदभाष्यकार, मनुस्मृति के भाषानुवादक, भास्करप्रकाश के रचयिता, न्याय, योग, सांख्य, वैशेषिक दर्शनों के भाषा टीकाकार और वेदप्रकाश के सम्पादक तथा प्रसिद्ध व्याख्याता हैं। अन्य पं० श्री आर्य-मुनि जी आदि भी ऐसे ही विद्वान हैं ॥

३–त्यागशील गृहस्थ–महात्मा भगवान् दास जी, महात्मा हंसराज जी, म० मुन्शी-राम जी आदि ॥

४–राजा महाराजा–एच० एच० महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंह जी ईडरनरेश सभापति परोपकारिणी सभा, एच० एच० राजाधिराज श्री १०८ नाहरसिंह वर्मा जी शाहपुराऽधीश मन्त्री परोप० आदि ॥

५–उच्च राजकर्मचारी और शिक्षित पुरुष–भक्त ईश्वरदास एम० ए०, रायबहादुर लालचन्द्र एम० ए० राय मूलराज एम० ए० जज, आदि ॥

इत्यादि बड़े २ महापुरुषों तक आर्य समाज के द्वारा वैदिक धर्म का अमृत पान कररहे हैं और अनेक बड़े २ व्यापारी, राज कर्मचारी, भक्त पुरुष, तथा छोटे २ ग्रामों के रईस, ज़मींदार, किसान, धनी, ग़रीब सब को वेदों का ज्ञान पहुंचाया जा रहा है, पहुंच भी चुका है ॥

३३ वर्ष में आर्य पुरुषों की संख्या १ लाख से अधिक नहीं हुई है, किन्तु उन्हों ने अपने परिश्रम के पैसे का व्यर्थ नाश न कर सत्कार्य में लगाया है, जिस से आज दिन प्रायः १७ अनाथालय जिन में १५०० अनाथों का का पालन होता है, ३३ समाचार पत्र, १२ यन्त्रालय, ५ गुरुकुल जहां ६५० ब्रह्मचारी विद्याध्ययन करते हैं, ११० पाठशालायें जिन में प्रायः १५०० पुत्र व कन्यायें शिक्षा पाती हैं, ८१ स्कूल, १ कालिज है जिनमें भी प्रायः ढाई हज़ार बालक शिक्षा पाते हैं, इस के अतिरिक्त प्रायः २० लाख रुपयों की सम्पत्ति भी हैं, अर्थात् न्यूनाधिक ७५०००) मासिक या ९ लाख वार्षिक रु० परोपकार में या परहितसाधन में अल्पसंख्यक आर्यों के धन से व्यय होता है, यदि इसी प्रकार के उदार १० करोड़ हिन्दू काम करना सीखलें तो वे भी वर्ष में न्यून से न्यून १ अर्ब रुपया देशोपकारी

कामों में व्यय कर देश का सुधार कर सकते हैं, हिन्दू राजे महाराजे भी इतने द्रव्य को व्यय कर सकते हैं, किन्तु इधर उन की दृष्टि नहीं है, दृष्टि के साथ ही उन में शिक्षा भी नहीं है। जहां प्रति सैकड़ा आर्य २३ शिक्षित हैं वहां हिन्दू ३ ही शिक्षा पाये हुये हैं ॥